मृत्युंजय योग

सितम्बर 18

अंक संजीवनी

मृत्युंजय योग

चलो चलें समृद्धि की ओर

ॐ मृत्युंजय महादेव त्राहि माम् शरणगतम्,
जन्म मृत्यु जरा व्याधि पीड़ितम् कर्म बन्धनेहि।
ॐ त्र्यंबकम् यजामहे सुगंधिम् पुष्टि वर्धनम् उर्वा रुकमीव बंधनात् मृत्योर्मोक्षीय मामृतात्।

सम्पादक की कलम से

सत्यम् शिवम् सुन्दरम्

UPHIN 2011/42940 1 सितम्बर 2018 वर्ष 7, अंक 12 ₹ 80/- संपादक : राकेश सिंह

सह संपादक : शिवप्रिया, अंक संयोजकः अरुण मुखर्जी

संपादकीय कार्यालयः 23 संदेश विहार पीतमपुरा, नई दिल्ली–110034.

Contact : 09999945010, shivshiv1008@gmail.com, www.mrityunjayyog.com

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक राकेश सिंह द्वारा राज आफसेट बेसमेंट ए.बी.सी. कॉम्प्लेक्स क्वींटन रोड कैसरबाग, लखनऊ से मुद्रित व 1384 सेक्टर के-1, आशियाना कानपुर रोड, लखनऊ से प्रकाशित।

अंक संजीवनी

ये संजीवनी विद्या का एक अंश है। अंक संजीवनी में व्यक्ति की अवचेतन शक्ति का उपयोग किया जाता है। विश्वास के साथ अपनाया गया अंक संजीवनी सिद्धांत बड़े ही चमत्कृत करने वाले परिणाम देता है। इसमें विशेष प्रक्रिया द्वारा चयनित अंकों को अपने साथ रखते हैं। उन अंकों की ऊर्जा लोगों के आभामण्डल और ऊर्जा चक्रों को उपचारित करती है। जिससे रुकावटें हटती हैं, सफलताएं सरल हो जाती हैं। तन के , मन के, धन के रास्ते खुलते है।

अंक संजीवनी का सिद्धांत–

अवचेतन शक्ति अर्थात सब कांशियस माइंड को ब्रह्मांड के सीक्रेट पता होते हैं। उसे व्यक्ति की जरूरतों की जानकारी भी होती है। अवचेतन शक्ति का उपयोग करके उन अंको का पता लगाया जा सकता है, जो आभामण्डल और ऊर्जा चक्रों का उपचार करने में सक्षम होते हैं।

किसी भी व्यक्ति के जीवन की सभी समस्याओं का कारण आभामण्डल में बिगाड़ ही होता है। कभी ग्रहों के कारण तो कभी वास्तु के कारण, तंत्र, गुस्से या आलोचना के कारण आभामण्डल और शरीर में पांच तत्व की ऊर्जाएं

बिगड़ जाती हैं। जिसके परिणाम स्वरूप तन, मन, धन की समस्याएं सामने आती हैं।

शास्त्र कहते हैं कि आभामण्डल के उपचार से समस्याएं अपने आप खत्म हो जाती हैं।

सभी अंको की अपनी एनर्जी होती है। जिस दिन जिस अंक की एनर्जी व्यक्ति के आभामण्डल से मैच करती है। उस दिन वह अंक ब्रह्मांड में फैली संजीवनी शक्ति को ग्रहण करके उस व्यक्ति के आभामण्डल को heal अर्थात उपचारित करता है।

इसे अंक संजीवनी उपचार कहा जाता है। उस अंक को उपचारक अंक कहा जाता है। ब्रह्मांड में ऊर्जाओं का परिवर्तन लगातार होता रहता है, इसलिये हर दिन उपचारक अंक बदलता रहता है।

उपचारक अंक का पता लगाने की विधि–

व्यक्ति की अवचेतन शक्ति जानती है कि किस दिन कौन सा अंक उसकी ऊर्जा को उपचारित करेगा। इसलिये आज्ञा चक्र की शक्तियों को अवचेतन शक्ति पर केंद्रित करके उपचारक अंक का पता लगाया जाता है।

अंक संजीवनी रुद्राक्ष–

आज्ञा चक्र की शक्तियों को अवचेतन शक्ति पर केंद्रित करना सबके वश की बात नही। इसलिये विद्वान अंक संजीवनी रुद्राक्ष का उपयोग करते हैं।

ये 9 मुखी रुद्राक्ष होता है। इसे 9 रुद्राभिषेक, 9 यज्ञ, 9 ग्रहों के अनुष्ठान से जाग्रत किया जाता है। उसके बाद टेलीपैथी के द्वारा उपयोग कर्ता के आज्ञा चक्र के साथ जोड़ दिया जाता है।

इस तरह से जाग्रत व सिद्ध अंक संजीवनी रुद्राक्ष आज्ञा चक्र और अवचेतन शक्ति का उपयोग करके उपचारक अंक बता देता है। अंक संजीवनी रुद्राक्ष के द्वारा अपने साथ ही दूसरों के भी उपचारक अंकों को आसानी से जाना जा सकता है।

उपचारक अंक जानने की विधि – संजीवनी उपचारक अंक को लकी नम्बर या सौभाग्य अंक भी कहा जाता है.

1. ब्रह्मांडीय उर्जा से आग्रह करें. कहें हे दिव्य संजीवनी शक्ति आपको प्रणाम है. मुझ पर शक्तिपात करके मेरे तन मन मस्तिष्क को उपचारित करें. अंक संजीवनी हेतु मेरे आज्ञा चक्र और अवचेतन शक्ति को जाग्रत करें. मुझे भगवान शिव के आभामंडल से जोड़ दें. मेरे मन को सुखमय शिवाश्रम बना दें.

2. संजीवनी शक्ति के मालिक भगवान शिव से निवेदन करें. कहें हे देवों के देव महादेव आपको मेरा प्रणाम है. अंक संजीवनी विद्या की सफलता हेतु माता महेश्वरी, भगवान गणेश सहित सपरिवार मेरे मन मंदिर में विराजमान हों. आपको साक्षी बनाकर एनर्जी गुरू राकेश आचार्या द्वारा रचित अंक संजीवनी विद्या का उपयोग कर रहा हूं. इससे मुझ (यदि किसी अन्य व्यक्ति के लिये उपचारक अंक जानना चाहते हैं तो उसका नाम ....) को तन, मन, धन के सुख प्राप्त हों. इसलिये दैवीय सहायता और सुरक्षा प्रदान करें. .

3. अंक संजीवनी रुद्राक्ष से आग्रह करें. कहें हे दिव्य रुद्राक्ष आपको अंक संजीवनी विद्या के सटीक

परिणामों के लिये जाग्रत किया गया है. आप मेरी भावनाओं के साथ जुड़ कर मेरे लिये सिद्ध हो जायें. मेरे आज्ञा चक्र और अवचेतन शक्ति का उपयोग करके मेरे (किसी अन्य के लिये कर रहे हैं तो उसका नाम ....) लिये आज का संजीवनी उपचारक अंक बतायें.

उसके बाद अंक संजीवनी रुद्राक्ष को कुछ क्षणों के लिये अपने माथे के नीचे दोनों भौहों के बीच आज्ञा चक्र पर छुवायें. इस बीच अंक संजीवनी के सफल प्रयोग हेतु भगवान शिव को धन्यवाद दें, संजीवनी शक्ति को धन्यवाद दें. एनर्जी गुरू राकेश आचार्या को धन्यवाद दें. अंक संजीवनी रुद्राक्ष को धन्यवाद दें. फिर आगे दी गई सारणी से उपचारक अंक लकी नम्बर प्राप्त करें. इसके लिये आंखें बंद करके अंक संजीवनी रुद्राक्ष को सारणी के खानों में रखें.

प्राप्त लकी नम्बर को उस दिन जेब में रखें. दिन भर उस अंक की उर्जा आभामंडल का उपचार करेगी. जिससे सौभाग्य का जागरण होता है. ये प्रक्रिया रोज दोहरायें.

सटीक परिणामों के लिये सावधानी...

1. जब लकी नम्बर अर्थात संजीवनी उपचारक अंक जेब में हो तो किसी की आलोचना न करें. इससे उपचारक क्षमता नष्ट हो जाती है.

2. पहली बार में ही रुद्राक्ष जिस खाने में रुके उसी का चयन करें. वही अवचेतन शक्ति द्वारा बताया गया नम्बर होता. अपने मर्जी से जबरदस्ती नम्बर न बदले. अन्यथा वांक्षित परिणाम नही मिलते हैं.

3. हो सकता है कई दिन तक एक ही नम्बर प्राप्त होता रहे. इसको लेकर किसी तरह का संशय न पालें. उसी नम्बर को उपयोग में लायें.

आपका जीवन सुखी हो यही हमारी कामना है.

लकी नम्बर के लिये पहले सारणी–1 का उपयोग करें. फिर उसमें दिये निर्देश के मुताबिक दूसरी सारणी का उपयोग करें.

सारणी–1

मूलाधार चक्र समूह...

इस समूह में मूलाधार, स्वाधिष्ठान और नाभि चक्र की उर्जाओं का प्रतिनिधित्व है.

समृद्धि, शक्ति, साहस, सम्मान, कर्मयोग और स्वास्थ में निर्णायक.

आगे आप 1, 2, 3 नम्बरों की सारणी में रुद्राक्ष रखकर अपना लकी नम्बर प्राप्त करें.

अनाहत चक्र समूह–

इस समूह में मणिपुर, अनाहत और विशुद्धि चक्र का प्रतिनिधित्व है.

सफलता, प्रेम, सम्मोहन, भय मुक्ति, आत्म सम्मान, क्रिएशन में निर्णायक.

आगे आप 4, 5, 6 नम्बर वाली सारणी में रुद्राक्ष रखकर अपना लकी नम्बर प्राप्त करें.

सौभाग्य चक्र समूह–

इस समूह में आज्ञा चक्र, थर्ड आई चक्र और सौभाग्य चक्र का प्रतिनिधित्व है.

देव सहायता, भक्ति, भाग्योदय, साधना सिद्धि, ब्रह्मांडीय रहस्यों की जानकारी, उच्च उपलब्धियों में निर्णायक.

आगे आप 7, 8, 9 अंक की सारणी में रुद्राक्ष रखकर अपना लकी नम्बर प्राप्त करें

मूलाधार चक्र समूह के अंक

अनाहत चक्र समूह के अंक

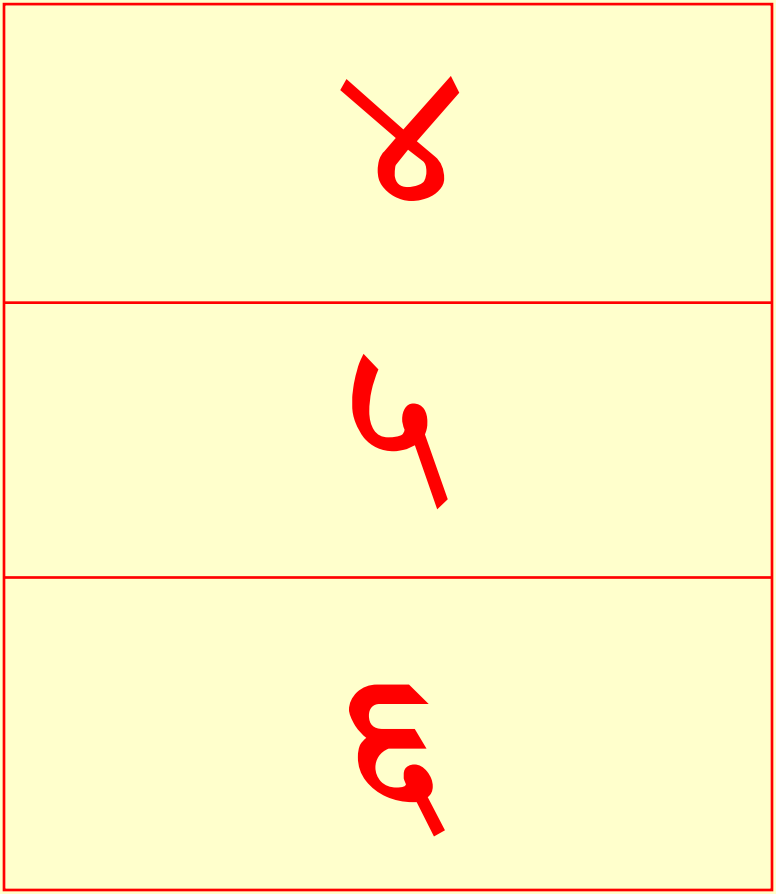

सौभाग्य चक्र समूह के अंक

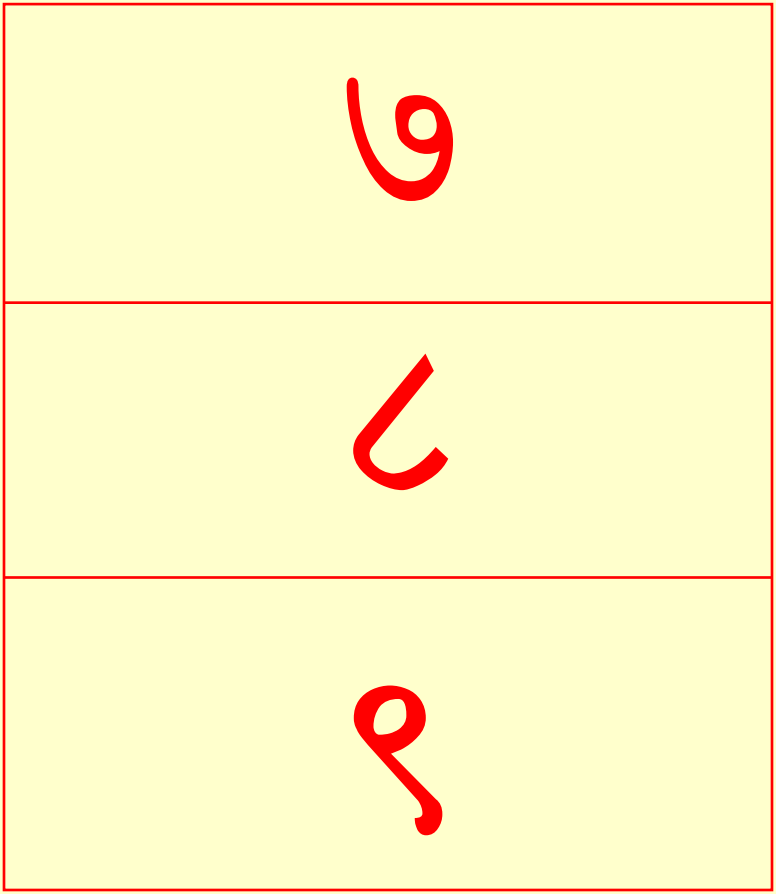

ऊं. ह्रौं जूं सः
१

ऊं. ह्रौं जूं सः
१

ऊं. ह्रौं जूं सः
१

ऊं. ह्रौं जूं सः
१

ऊं. ह्रौं जूं सः

ऊं. ह्रौं जूं सः

२

ऊं. ह्रौं जूं सः

ऊं. ह्रौं जूं सः

ऊं. ह्रौं जूं सः

ऊं. ह्रौं जूं सः

२

ऊं. ह्रौं जूं सः

ऊं. ह्रौं जूं सः

ऊं. ह्रौं जूं सः

ऊं. ह्रौं जूं सः

२

ऊं. ह्रौं जूं सः

ऊं. ह्रौं जूं सः

ऊं. ह्रौं जूं सः

ऊं. ह्रौं जूं सः

२

ऊं. ह्रौं जूं सः

ऊं. ह्रौं जूं सः

ऊं. ह्रौं जूं सः
ऊं. ह्रौं जूं सः
ऊं. ह्रौं जूं सः
ऊं. ह्रौं जूं सः

ऊं. ह्रौं जूं सः
ऊं. ह्रौं जूं सः
ऊं. ह्रौं जूं सः
ऊं. ह्रौं जूं सः

ऊं. ह्रौं जूं सः
ऊं. ह्रौं जूं सः
ऊं. ह्रौं जूं सः
ऊं. ह्रौं जूं सः

ऊं. ह्रौं जूं सः
ऊं. ह्रौं जूं सः
ऊं. ह्रौं जूं सः
ऊं. ह्रौं जूं सः

ऊं. ह्रौं जूं सः
४

ऊं. ह्रौं जूं सः
४

ऊं. ह्रौं जूं सः
४

ऊं. ह्रौं जूं सः
४

ऊं. ह्रौं जूं सः
५

ऊं. ह्रौं जूं सः
५

ऊं. ह्रौं जूं सः
५

ऊं. ह्रौं जूं सः
५

ऊं. ह्रौं जूं सः
ऊं. ह्रौं जूं सः
ऊं. ह्रौं जूं सः
ऊं. ह्रौं जूं सः

ऊं. ह्रौं जूं सः
ऊं. ह्रौं जूं सः
ऊं. ह्रौं जूं सः
ऊं. ह्रौं जूं सः

ऊं. ह्रौं जूं सः
ऊं. ह्रौं जूं सः
ऊं. ह्रौं जूं सः
ऊं. ह्रौं जूं सः

ऊं. ह्रौं जूं सः
ऊं. ह्रौं जूं सः
ऊं. ह्रौं जूं सः
ऊं. ह्रौं जूं सः

ऊं. ह्रौं जूं सः

ऊं. ह्रौं जूं सः

ऊं. ह्रौं जूं सः

ऊं. ह्रौं जूं सः

७

ऊं. ह्रौं जूं सः

ऊं. ह्रौं जूं सः

ऊं. ह्रौं जूं सः

ऊं. ह्रौं जूं सः

७

ऊं. ह्रौं जूं सः

ऊं. ह्रौं जूं सः

ऊं. ह्रौं जूं सः

ऊं. ह्रौं जूं सः

७

ऊं. ह्रौं जूं सः

ऊं. ह्रौं जूं सः

ऊं. ह्रौं जूं सः

ऊं. ह्रौं जूं सः

७

ऊं. ह्रौं जूं सः
ऊं. ह्रौं जूं सः
ऊं. ह्रौं जूं सः
ऊं. ह्रौं जूं सः
८

ऊं. ह्रौं जूं सः
ऊं. ह्रौं जूं सः
ऊं. ह्रौं जूं सः
ऊं. ह्रौं जूं सः
८

ऊं. ह्रौं जूं सः
ऊं. ह्रौं जूं सः
ऊं. ह्रौं जूं सः
ऊं. ह्रौं जूं सः
८

ऊं. ह्रौं जूं सः
ऊं. ह्रौं जूं सः
ऊं. ह्रौं जूं सः
ऊं. ह्रौं जूं सः
८

ऊं. ह्रौं जूं सः
१

ऊं. ह्रौं जूं सः
१

ऊं. ह्रौं जूं सः
१

ऊं. ह्रौं जूं सः
१

एनर्जी के द्वारा लोगों को स्वस्थ और सुखी बनाने के गुरू जी के अभियान की मुख्यमंत्रियों द्वारा सराहना

मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश श्री योगी आदित्यनाथ द्वारा गुरूजी का सम्मान

मुख्यमंत्री उत्तराखण्ड श्री त्रिवेन्द्र सिंह रावत द्वारा गुरूजी का सम्मान

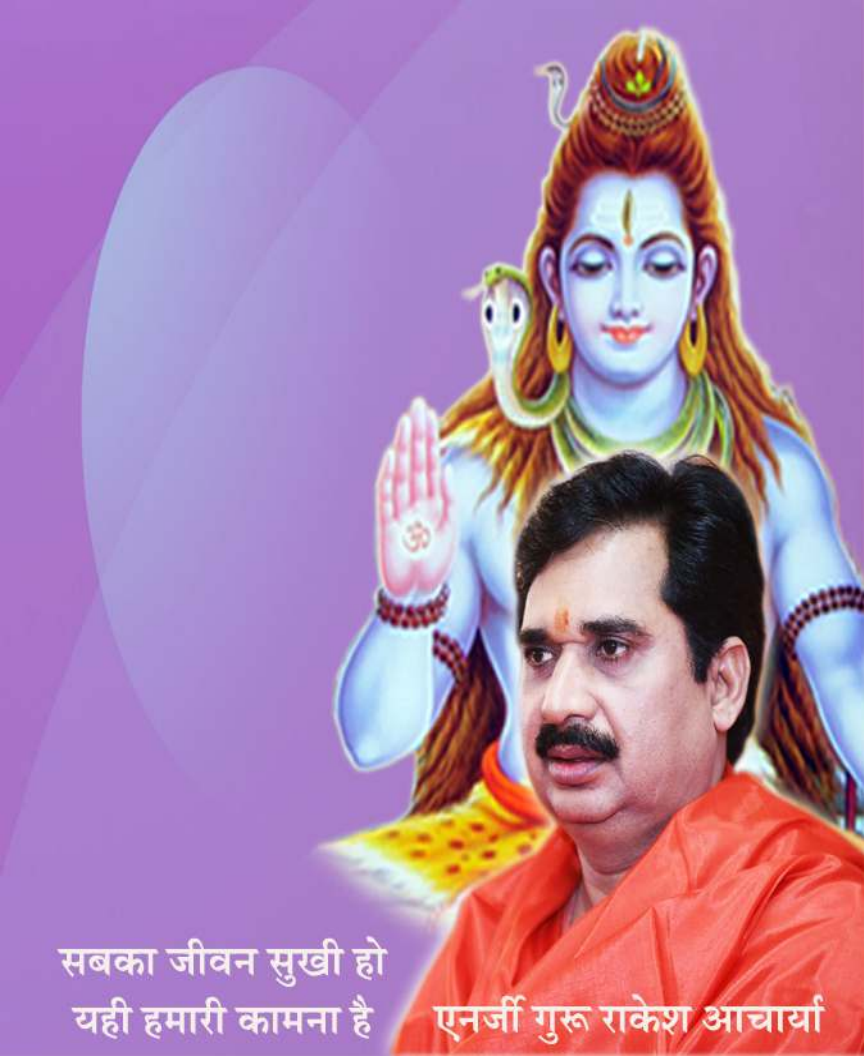
सबका जीवन सुखी हो
यही हमारी कामना है
एनर्जी गुरू राकेश आचार्या